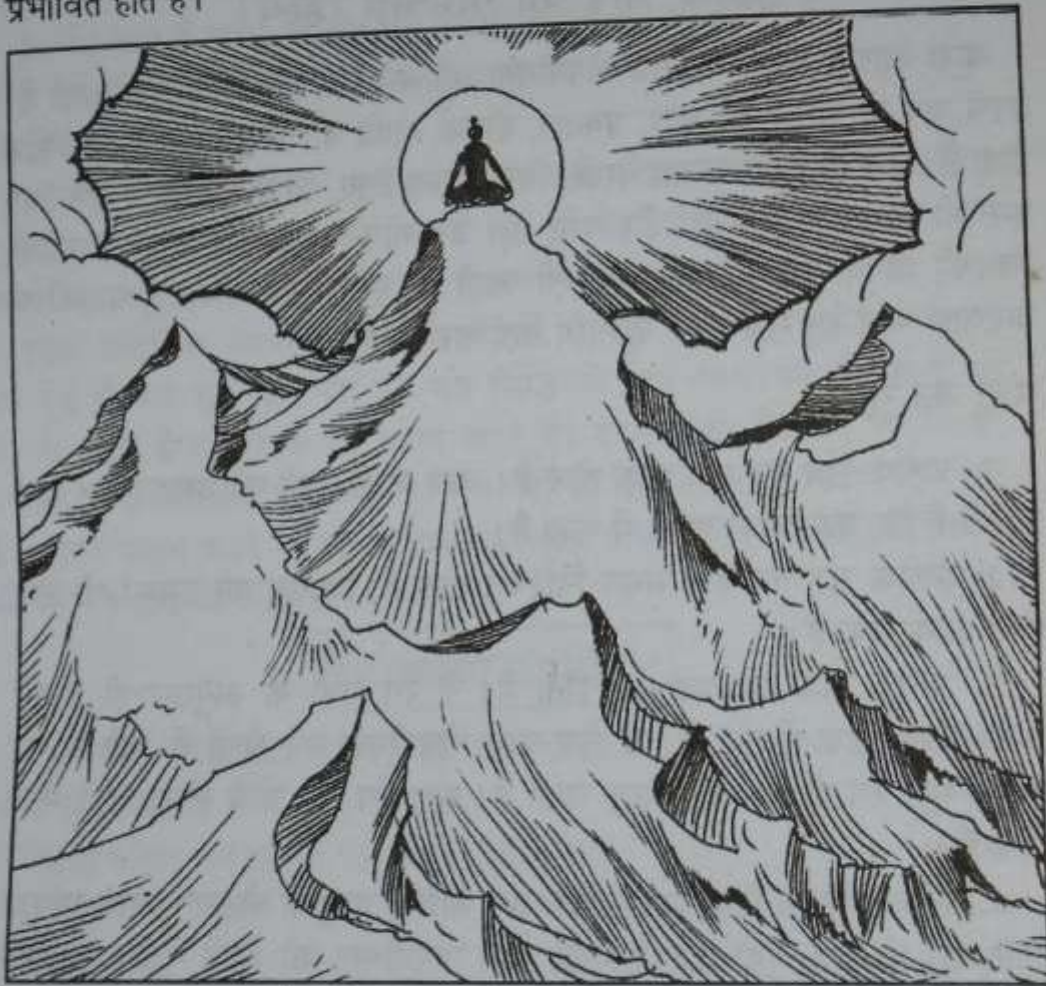


## मंत्र-वशीकरण

तंत्र में वशीकरण की कुछ ऐसी क्रियाएं हैं, जिनमें केवल मंत्र को सिद्ध किया जाता है। मंत्र सिद्ध होने पर साधारण क्रियाओं के द्वारा मंत्र पढ़कर ईष्ट का लक्ष्य करने से उसका वशीकरण होता है। इस वशीकरण से पशु तक प्रभावित होते हैं।



पर्वत-शिखर पर मंत्र साधना करता साधक

मंत्र की सिद्धि के लिए प्राचीन ग्रंथों में केवल उसकी जप संख्या लिखी गई है, किंतु अनेकानेक लोगों को शिकायत होती है कि निश्चित संख्या में जप



**COLLECTION OF VARIOUS**  
**-> HINDUISM SCRIPTURES**  
**-> HINDU COMICS**  
**-> AYURVEDA**  
**-> MAGZINES**

**FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)**

**Made with**



**By**

**Avinash/Shashi**

**Icreator of  
hinduism  
server!**

**KAPWING**





**COLLECTION OF VARIOUS**  
**-> HINDUISM SCRIPTURES**  
**-> HINDU COMICS**  
**-> AYURVEDA**  
**-> MAGZINES**

**FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)**

**Made with**



**By**

**Avinash/Shashi**

**Icreator of  
hinduism  
server!**

**KAPWING**

करने से भी कोई लाभ नहीं हुआ और न ही कोई शक्ति प्राप्त हुई। इसका कारण केवल इतना है कि प्राचीन पुस्तकों में केवल मंत्र और उसकी जप संख्या का विवरण है। उस गोपनीय गुरु-दीक्षा का वर्णन नहीं है, जो मंत्र देते समय गुरु प्रदान करता है। इसका ही अनुवाद आधुनिक युग की पुस्तकों में उपलब्ध है और चूंकि आजकल लोगों में नास्तिक भाव की वृद्धि के कारण वास्तविक ज्ञानी खुद को प्रकट ही नहीं करते, इसलिए इस गोपनीय रहस्यात्मक दीक्षा पद्धति का लोप हो गया है। जो लोग तंत्र के महान ज्ञाता बनकर लोगों को बेवकूफ बना रहे हैं, उन्हें तो खुद भी जानकारी नहीं कि मंत्र जाप की क्रिया का रहस्य क्या है? ऐसे में वे किसी को बताएंगे क्या?

### मंत्र-जाप का गोपनीय रहस्य

कुछ अत्यंत सूक्ष्म बातें तो गोपनीयता की कड़ी शपथ के अंतर्गत आती हैं। इनमें जप के समय की मुद्रा, प्रकाश, दीपक आदि की स्थिति का सूक्ष्म निर्देश होता है। उसे तो बिना पात्रता परखे, बिना शपथ लिए, बिना गुरु क्रिया पूर्ण किए हम भी बताने में असमर्थ हैं। परंतु हम उन गोपनीय रहस्यों को बता रहे हैं, जिनकी गोपनीयता की शपथ तो ली जाती है, परंतु तमाम जिज्ञासु पाठकों के कल्याण भाव हेतु रहस्य का खुलासा यहां कर रहे हैं।

#### मंत्रों का रहस्य

1. प्रत्येक मंत्र का एक चक्र होता है। जाप करने वाले को उसका ज्ञान होना जरूरी है कि वह उसके शरीर में कहां है।
2. प्रत्येक मंत्र का एक समय निश्चित होता है, जिज्ञासु को उसका भी ज्ञान होना आवश्यक है।
3. प्रत्येक मंत्र का एक रंग होता है। ये रंग मंत्रों के अनुसार ही हजारों भिन्न-भिन्न शेड में होते हैं। ये शेड परम गोपनीयता की श्रेणी में आते हैं, पर उसके मूल रंग से भी काम चल जाता है। मूल रंग मैंने नीचे लिखे मंत्रों में दे दिया है।
4. प्रत्येक मंत्र के लिए वानस्पतिक एवं जैविक वस्तुओं के साथ-साथ समिधा आदि का भी सूत्र जुड़ा होता है। यह परम गोपनीयता की श्रेणी में है। वाममार्ग में तो ऐसी वस्तुओं का प्रयोग भी किया जाता है, जो कोई आधुनिक युग का सभ्य आदमी करना ही नहीं चाहेगा।
5. प्रत्येक मंत्र के लिए एक निश्चित आसन, मुद्रा और क्रिया आदि का



विवरण जुड़ा होता है। यह भी परम गोपनीयता की श्रेणी में आता है।

6. स्थान एवं आसन भी मंत्र के अनुसार निर्धारित किए जाते हैं।

7. प्रत्येक मंत्र के उच्चारण और लय का भी विशिष्ट महत्व होता है। इसे गुरु बताता है। इसे पुस्तक में व्यक्त भी नहीं किया जा सकता। प्राचीनकाल में वैदिक मंत्रों का पाठ सात स्वरों में किया जाता था। बाद में तीन हो गया। अब तो लोग स्वरों के उतार-चढ़ाव को हाथों की गति से व्यक्त करते हैं। ऐसे में वह मंत्र किस प्रकार प्रभावी हो सकता है?

8. वाममार्गी मंत्र में प्राचीनकाल में डमरू की ध्वनि का प्रयोग किया जाता था। जीभ द्वारा इस प्रकार की ध्वनि की हू-ब-हू नकल संभव ही नहीं है। इसलिए मंत्र देर से सिद्ध होता है।

9. मंत्र जाप में वस्त्रों के रंग और उनकी प्रवृत्ति का भी महत्व है।

10. इंद्रियों (जननेंद्रियों) की विशिष्ट मुद्राओं का प्रयोग वाममार्ग की परम गोपनीय तकनीक है।

11. मंत्र जाप में जीभ का पूर्णतया स्वतंत्र होना बेहद जरूरी है। इसके लिए इसकी सफाई के साथ-साथ गाय के घृत में बेलपत्र का रस डालकर गर्म करके कुल्ला करना चाहिए। बहुत से गुरु जीभ को कटवाते हैं।

इनके अतिरिक्त आचरण संबंधी मर्यादाओं का भी पालन करना पड़ता है, जो हम पूर्व में बता चुके हैं। यहां हम मंत्र सिद्धि के लिए आवश्यक निर्देश दे रहे हैं, जो सरल हैं और सफलता प्रदान करते हैं। इनमें थोड़ी देर लग सकती है, क्योंकि सभी तकनीक का वर्णन सम्भव नहीं है, तथापि जितने निर्देश दिए गए हैं, उनका पालन करने से शत-प्रतिशत सफलता प्राप्त होगी। ये निर्देश मेरे स्वयं के अनुभव द्वारा अन्वेषित हैं।

### वशीकरण मंत्रसिद्धि

(1) मंत्र : ओऽऽऽऽऽम् नमः महा यक्षिणी ..... वशमानय यं यं यं यं यं यं यं यं फट् स्वाहा।

सिद्धि योगः जप संख्या 11664 (108 माला)

प्रकाश रंग—श्वेत

वस्त्र—श्वेत

भाव—सात्विक

समय—ब्रह्ममुहूर्त

आसन—नैऋत्य कोण, ईशान मुख

**प्रयोग :** सिद्धि होने पर जल लेकर अभिमंत्रित करके छिड़कें। यह जल दाहिनी हथेली में चुल्लू बनाकर लिया जाता है।

(2) मंत्र : ओऽऽऽऽऽम् नमः कट विकट घोररूपिणी स्वाहा।

**सिद्धि योग :** जप संख्या 11664 (108 माला)

प्रकाश रंग—रक्तिम

वस्त्र—रक्तिम

भाव—तामसी

समय—अर्द्धरात्रि

आसन—ईशान कोण, ईशान मुख, दक्षिण मुख

**प्रयोग :** इस मंत्र से सात बार भोजन अभिमंत्रित करके, जिसका नाम लेकर सात दिन तक लगातार खाते रहेंगे, वह वश में होगा।

(3) मंत्र : ओऽऽऽऽऽम् वश्यमुखी राजमुखी स्वाहा।

**सिद्धि योग :** जप संख्या 11664 (108 माला)

प्रकाश रंग—सिंदूरी

वस्त्र—सिंदूरी

भाव—तामसी

समय—अर्द्धरात्रि

आसन—ईशान कोण, ईशान मुख

**प्रयोग :** इस मंत्र को सात बार पढ़कर मुंह धोने से चेहरे पर ऐसा निखार और प्रभाव उत्पन्न होता है कि सभी प्रभावित होते हैं और बिगड़े काम बन जाते हैं।

(4) मंत्र : ओऽऽऽऽऽम् श्री राजमुखी वश्यमुखी स्वाहा।

**सिद्धि योग :** (देखें मंत्र 3 का सिद्धि योग)

**प्रयोग :** (1) 3 के अनुसार।

(2) बाएं हाथ में तेल लेकर दाहिने हाथ की छोटी अंगुली से तीन बार अभिमंत्रित करके, फिर बीच वाली से तीन बार मंत्र पढ़कर तेल को स्पर्श करें और इसी अंगुली से इस तेल को केश एवं मुख में लगाएं तो सभी मनुष्य वश में होते हैं। यह मंत्र पशुओं पर भी प्रभावी होता है।

(5) मंत्र : ओऽऽऽऽऽम् जय-जय स्तंभय जंभय-जंभय मोहय-मोहय सर्वसत्त्वानमः स्वाहा।

**सिद्धि योग :** जप संख्या 11664 (108 माला)

प्रकाश रंग—सुनहला

वस्त्र—सुनहला

भाव—राजसी

समय—सूर्योदय काल

आसन—केन्द्र में

प्रयोग : (1) इस मंत्र से सात बार अभिमंत्रित करके किसी को पुष्प देने पर वह मानसिक रूप से प्रभावित हो जाता है।

(2) उपर्युक्त मंत्र 34992 बार जपने से किसी क्रिया की जरूरत नहीं रहती। साधक अपने दर्शन से ही सबको मुग्ध करता है।

(3) शाखोट (शाखू) की जड़ को घिसकर विभूति के साथ तिलक लगाने से (तीन मंत्र से अभिमंत्रित करके) देखने वाला वशीभूत हो जाता है।

(6) मंत्र : ओऽऽऽऽऽम् नमः चामुंडाय महाकाली ऐं रौं डं डं डं फट् स्वाहा।

सिद्धि योग : जप संख्या 23328 (216 माला)

प्रकाश रंग—रक्तिम

वस्त्र—रक्तिम

भाव—तामसी

समय—अर्द्धरात्रि

आसन—ईशान कोण

प्रयोग : चिरमिटे की जड़ को गोरोचन के साथ पीसकर अभिमंत्रित करके तिलक करें।

(7) मंत्र : ओऽऽऽऽऽम् नमः कंदर्पशरविजालिनिमालिनि सर्वलोक वशं करि करि स्वाहा।

सिद्धि योग : जप संख्या 1188 (11 माला)

प्रकाश रंग—रक्तिम

वस्त्र—रक्तिम

भाव—तामसी

समय—अर्द्धरात्रि

आसन—ईशान कोण

प्रयोग : (1) यह मंत्र कृष्णपक्ष की अष्टमी या चौदस को उपवास करके सायंकाल किसी सहदेई के पौधे के पास बैठकर उसकी पूजा करके जपने से सिद्ध होता है। इसके बाद कृष्ण पक्ष की अष्टमी या चौदस को किसी भी सहदेई के पौधे की पूजा करके अगले दिन प्रातःकाल उखाड़ लाएं। पूजा के समय बाद में मात्र 108 मंत्र जपना होता है। प्रथम बार का पौधा भी अगले दिन



ब्रह्ममुहूर्त में उखाड़ लाएं।

सहदेई के इस पंचांग (पांचों अंग) को छाया में सुखा कर खरल में महीन चूर्ण कर लें। इस चूर्ण को कपड़े से छान लें और इस चूर्ण की एक चुटकी किसी के भी सिर पर डालने से वह आपके वश में होगा।

(2) गोरोचन के साथ सहदेई के इस चूर्ण को मिलाकर उपर्युक्त मंत्र से सात बार अभिमंत्रित करके तिलक लगाएं तो जो देखे, वही में वश में हो जाए।

(8) मंत्र : ओऽऽऽऽऽम् नमः भगवती मातंगेश्वरी सर्वमुखरविजनी सर्वेषां महामाया मातंगी कुमारिके लहलह जिह्वे सर्वलोक वशं करि-करि स्वाहा।

सिद्धि योग : जप संख्या 1188 (11 माला)

प्रकाश रंग—रक्तिम

वस्त्र—रक्तिम

भाव—तामसी

समय—अर्द्धरात्रि

आसन—ईशान कोण

प्रयोग : इस मंत्र को सात बार पढ़कर विष्णुक्रांता की जड़ चन्द्रग्रहण के समय उखाड़ लाएं। इस जड़ को पीसकर अंजन करने से या गोरोचन के साथ इसका तिलक करने से संसार वश में होता है।

(9) मंत्र : ओऽऽऽऽऽम् वज्र किरणेशिवरेक्षभवेममाद्य अमृतं कुरु-कुरु स्वाहा।

सिद्धि योग : जप संख्या 1188 (11 माला)

प्रकाश रंग—राख जैसा

वस्त्र—राख जैसा

भाव—सात्विक

समय—ब्रह्ममुहूर्त

आसन—नैऋत्य से नीचे

प्रयोग : नीलकमल की जड़, मैनसिल, गोरोचन, पान का रस और शहद मिलाकर अभिमंत्रित करें (सात मंत्र) और तिलक लगाएं। जो देखेगा, वही वश में हो जाएगा।

(10) मंत्र : ओऽऽऽऽऽम् पिंगलायै नमः।

सिद्धि योग : जप संख्या 1188 (11 माला)

प्रकाश रंग—सुनहला

वस्त्र—सुनहला

भाव—राजसी





**COLLECTION OF VARIOUS**  
**-> HINDUISM SCRIPTURES**  
**-> HINDU COMICS**  
**-> AYURVEDA**  
**-> MAGZINES**

**FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)**

**Made with**



**By**

**Avinash/Shashi**

**Icreator of  
hinduism  
server!**

**KAPWING**





**COLLECTION OF VARIOUS**  
**-> HINDUISM SCRIPTURES**  
**-> HINDU COMICS**  
**-> AYURVEDA**  
**-> MAGZINES**

**FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)**

**Made with**



**By**

**Avinash/Shashi**

**Icreator of  
hinduism  
server!**



**KAPWING**



समय—सूर्योदय काल

आसन—केंद्र में

प्रयोग : (1) इस मंत्र से अभिमंत्रित भृंगराज की जड़ मुंह में डालकर जिसके पास जाएं, वह मुग्ध होगा।

(2) नीलकमल की जड़ एवं तिरिच्छकी की जड़ को पीसकर उपर्युक्त मंत्र से सात बार अभिमंत्रित करके पान के साथ प्रयोग करने से पान खाने वाला मनुष्य वश में होगा।

(3) कश्मीरी केसर, तगर, कूट, हरताल एवं अनामिका अंगुली का रक्त मिलाकर तिलक करने से भी देखने वाले मुग्ध होते हैं।

(11) मंत्र : ओऽऽऽऽऽम् नमः रुद्राय।

ओऽऽऽऽऽम् नमः चामुंडाय।

ओऽऽऽऽऽम् क्रीं क्रिं क्रां क्रां क्रं कं कं कं फट् स्वाहा।

ओऽऽऽऽऽम् ..... (नाम) वशमानय कुरु कुरु फट् स्वाहा।

सिद्धि योग : जप संख्या 1188 (11 माला)

प्रकाश रंग—रक्तिम

वस्त्र—रक्तिम

भाव—तामसी

समय—अर्द्धरात्रि

आसन—ईशान कोण

प्रयोग : इस मंत्र की सिद्धि के पश्चात् काले धतूरे के किसी स्वस्थ पौधे को ढूँढ़ें। सींच कर उसकी पूजा करें और उसकी सुरक्षा की व्यवस्था करें। इस पौधे के फूल, फल, पत्ते, जड़ आदि इस क्रम से लाएं—

पुष्प नक्षत्र—फूल

भरणी नक्षत्र—फल

विशाखा नक्षत्र—शाखा

हस्त नक्षत्र—पत्ते

मूल नक्षत्र—जड़

इन्हें क्रम से सुखाकर एकत्रित करते जाएं। इसे कपूर में मिलाकर खूब महीन चूर्ण करके कुमकुम और गोरोचन मिलाकर शीशे की किसी शीशी में बंद करके रख लें। इसका तिलक करने से हठी स्त्री भी वश में आ जाती है। □□